हिन्दी-पुस्तक-एजेन्सी-माला पुष्प—१

भाव चित्रावली

श्रीधीरेन्द्रनाथ गंगोपाध्याय

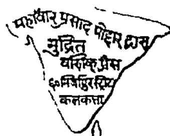
मूल्य ४) राजसंस्करण ६)

प्रकाशक
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी,
१२६, हरिसन रोड, कलकत्ता

प्रकाशक—
महावीरप्रसाद पोद्दार
स्थापक–हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
१२६, हरिसन रोड, कलकत्ता
से बंगला और अंगरेजी संस्करण
भी मिलते हैं।

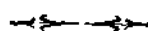
बंगला और अंगरेजी संस्करणोंके
प्रकाशक—
आनन्दभण्डार पब्लिशिंग हाउस
२७, सुकिया स्ट्रीट
यहां हिन्दी संस्करण भी
मिलता है।

प्रिंटर—



चित्र—
यू० राय एण्ड सन्स

वक्तव्य



इस पुस्तकके कुछ चित्र पहले पहल बङ्गभाषाके सुप्रसिद्ध मासिक पत्र "भारतवर्ष"में प्रकाशित हुए थे। लोगोंने उन्हें खूब पसन्द किया, चारों ओरसे आग्रह होने लगा कि ये चित्र पुस्तकाकार निकलने चाहिए। आनन्द भण्डारने इस कार्य भारको सानन्द ग्रहण किया। **भावेर अभिव्यक्ति**के नामसे बङ्गला और Expressions & Caricatures के नामसे अंग्रेजी संस्करण प्रकाशित किया। आनन्द भण्डारने उन दोनों संस्करणोंको सर्वांग सुन्दर बनानेमें जो परिश्रम और चेष्टा की है उसके लिये वह मेरे हार्दिक धन्यवादका पात्र है।

आनन्दकी बात है कि बङ्गसमाज तथा अंग्रेज जनताने पुस्तकोंका आशातीत आदर किया। बड़े बड़े विद्वानोंने उनकी सराहना की, अंग्रेजी तथा बङ्ग-भाषाके नामी नामी पत्रोंने अपने कालमोंमें प्रशंसापूर्ण लेख लिखे।

हमलोग राष्ट्रभाषा हिन्दीमें भी एक संस्करण निकालना चाहते थे। इसी समय कलकत्तेके सुविख्यात प्रकाशक "हिन्दी पुस्तक एजेन्सी" तथा "वणिक प्रेस"के सञ्चालक श्रीयुक्त महावीरप्रसाद पोद्दारसे भेंट हुई। उन्होंने इसे हिन्दीमें प्रकाशित करनेकी अभिलाषा प्रकट की। उनका उत्साह देखकर आनन्द भण्डारने इसके हिन्दी संस्करण प्रकाशनका अधिकार उन्हें प्रदान किया। आशा है, हिन्दी प्रेमियोंका इससे विशेष मनोरञ्जन होगा। दूसरा भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है। मित्रोंकी सम्मति है कि हिन्दी जनताके खास खास भाव तथा रीति रिवाज लेकर भी कुछ भाव व्यक्त किये जायँ। मैं आशा पालनकी चेष्टा करूँगा।

धीरेन्द्रनाथ गंगोपाध्याय

भूमिका



सौभाग्यवश आज मुझे अपने प्रिय मित्र श्रीयुक्त धीरेन्द्रनाथ गंगोपाध्यायसे हिन्दी संसारको परिचित करानेका अवसर मिला है। भाव प्रदर्शनकी कलामें आपने बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की है। आपके भावचित्र बड़े चावसे देखे जाते हैं, उनकी बहुत प्रशंसा हो चुकी है। सचमुच इस विषयमें धीरेन्द्र बाबू अद्वितीय हैं। दर्शक इस भावचित्रावलीमें देखेंगे कि एक ही धीरेन्द्र बाबूने कितनी भूमिकायें ग्रहण की हैं और किस सफलताके साथ! अच्छे अच्छे समझदार धोखा खा जाते हैं, दाँतों तले अँगुली दबा लेते हैं, आश्चर्यसे कहते हैं, ऐं! सब चित्रोंमें एक ही आदमी है! जी हाँ, एक ही, ब्रह्म एक ही है मायाके पटलमें अनेक रूप देख पड़ते हैं, एक ही सुवर्णसे भिन्न भिन्न प्रकारके आभूषण बने हैं, भगवान एक ही, अवतार भिन्न भिन्न हैं।

धीरेन्द्र बाबूमें यह शक्ति स्वाभाविक—ईश्वरदत्त है। आजकी नहीं—अनेक दिनकी बात है, हम दोनों मित्र कलकत्ता गवर्नमेन्ट-आर्ट-स्कूलमें चित्रकलाका अध्ययन करते थे। उस समय धीरेन्द्र बाबूमें इन भावोंका विकाश हो रहा था। आप तरह तरहकी सूरतें बदलकर भाव दिखाकर हमलोगोंको हँसाते हँसाते लोटा देते थे। आज उसी मित्रने इस कलामें ऐसी निपुणता और प्रसिद्धि प्राप्त कर ली, अपनी कलाके "उस्ताद" माने जाने लगे, इसका मुझे आनन्दपूर्ण गर्व है।

इन चित्रोंमे प्राय स्वाभाविकता सीमाको पहुँच गयी है। और पत्र पत्रपर कहता है, "एकोहं बहुस्याम" "एकोहं बहुस्याम"। दर्शक मोहित होकर आश्चर्यमें देखने लगता है। इसमेंसे अनेक चित्र उपदेशप्रद हैं, उनसे सुधार और शुद्ध आमोद दोनों प्राप्त होते हैं। अधिकांश चित्र दर्शकोंका मनोरञ्जन करेंगे इसमें सन्देह नहीं। भाषामें अनभिज्ञ जनता—अशिक्षित, बच्चे, स्त्रियां आदि कवि और लेखकके उच्च भावोंको ग्रहण नहीं कर सकते, पर चित्रोंसे उनका भी मनोरञ्जन होता है और शिक्षा मिलती है। पढ़े लिखे लोग भी किसी पत्र या पुस्तकको उठाकर पहले उसके चित्र ही देखते हैं। यह प्रवृत्ति स्वाभाविक है। इसलिए मनोरञ्जन और शिक्षा कार्यमें भी चित्रोंकी बहुत कुछ सहायता आवश्यक है।

धारेन्द्र बाबू ब्रह्मसमाजके रत्न हैं इसलिये कई भाव उसी समाजकी दृष्टिसे उपस्थित किये गये हैं। फिर भी अधिकांश चित्र हम सब लोगोंके लिये समान भावसे उपयोगी हैं।

दर्शक चित्र देखनेके लिये छटपटा रहे होंगे इसलिये यह भूमिका यहीं समाप्त।

रामेश्वरप्रसाद वर्म्मा

प्रकाशकका निवेदन



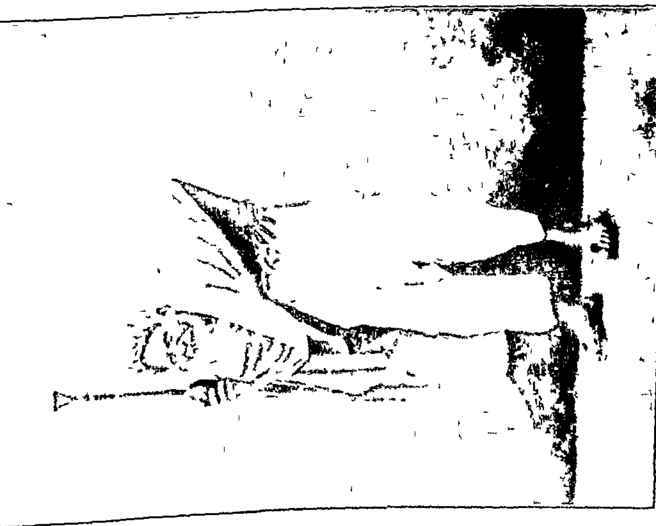
श्रीयुक्त धीरेन्द्र नाथ गंगोपाध्याय और आनन्द भण्डार पब्लिशिंग हाउसके हम अत्यन्त कृतज्ञ हैं जिन्होंने इस पुस्तकके हिन्दी संस्करण प्रकाशनका अधिकार हिन्दी पुस्तक एजेन्सीको सानन्द प्रदान कर कृतार्थ किया। साथ ही हम यू० राय एण्ड सन्सके स्वत्वाधिकारी अपने हितैषी मित्र श्रीयुक्त सुविनयराय चौधरी महाशयके भी कृतज्ञ हैं। उन्होंने इस पुस्तकके हिन्दी संस्करण प्रकाशनका भार हमें दिलानेमें विशेष चेष्टा की है।

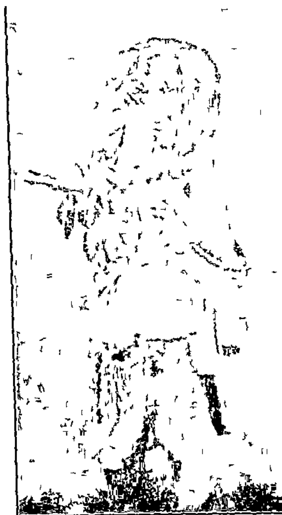
हम विश्वास है कि अपने इन मित्रोंकी कृपासे हिन्दी पुस्तक एजेन्सी भविष्यमें अनेक सचित्र पुस्तकें हिन्दी पाठकोंको भेंट कर सकेगा।

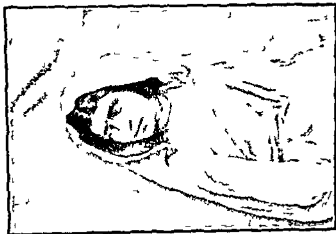
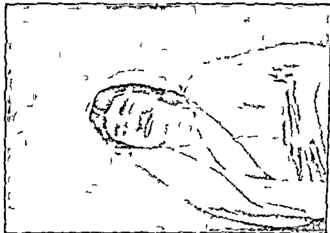
विनीत—

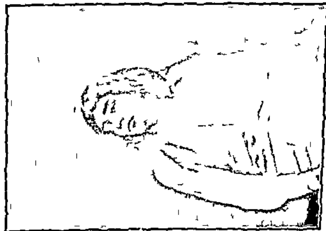
प्रकाशक

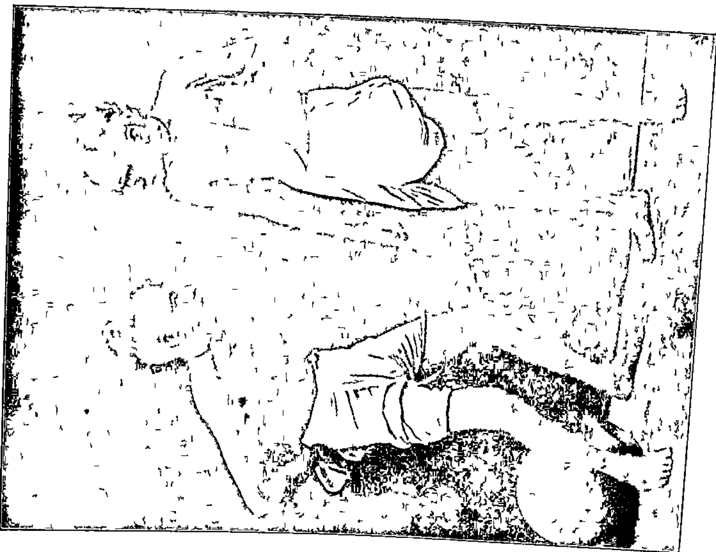


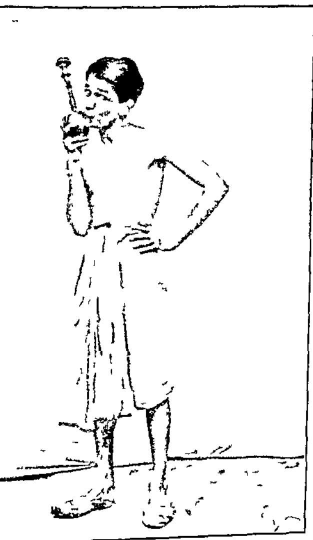




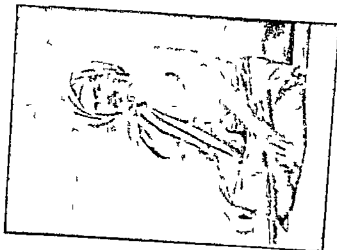






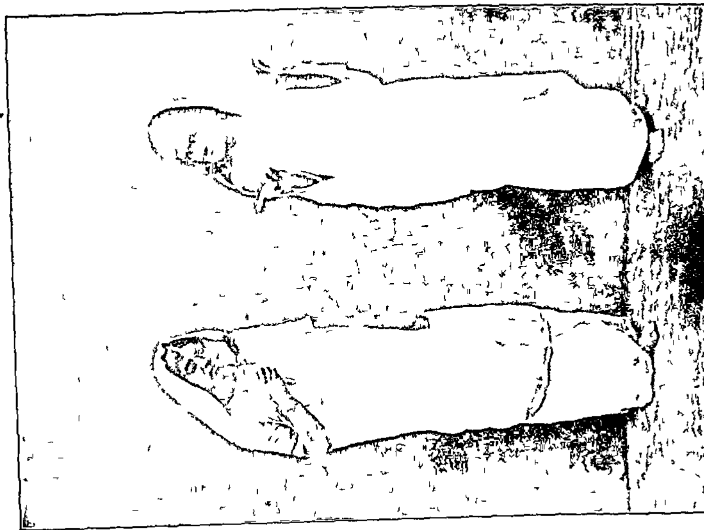
















[illegible]











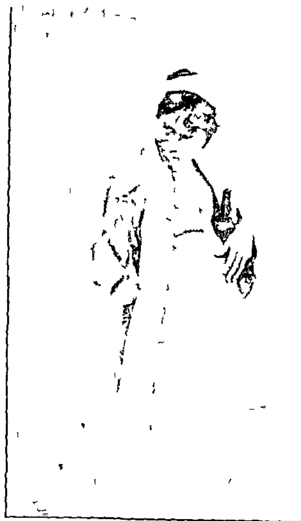


हाइ गिलहट फ्रू



الباب الثاني

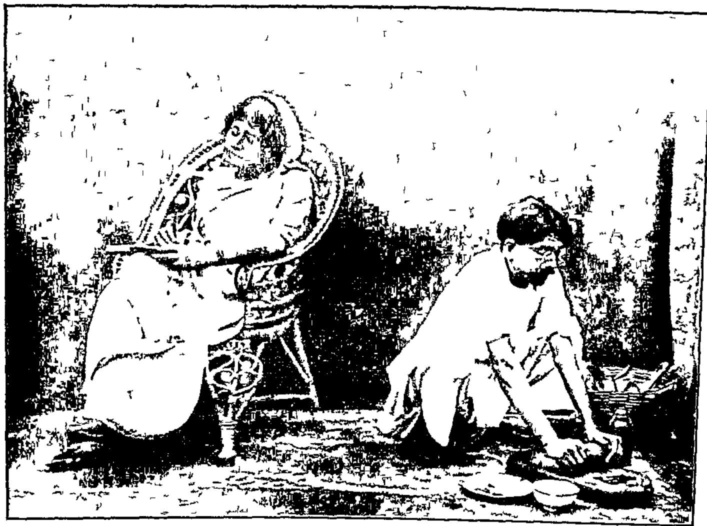










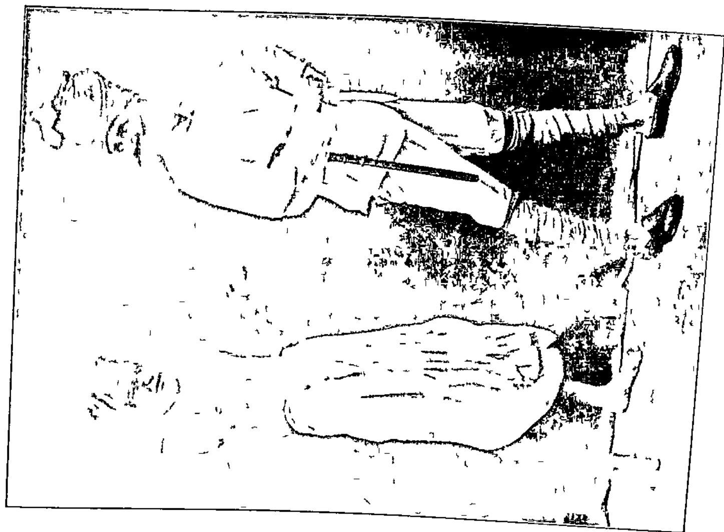


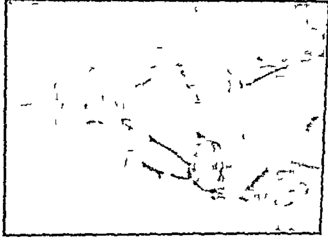


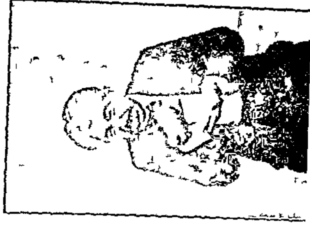
[illegible]

[illegible]

[illegible]

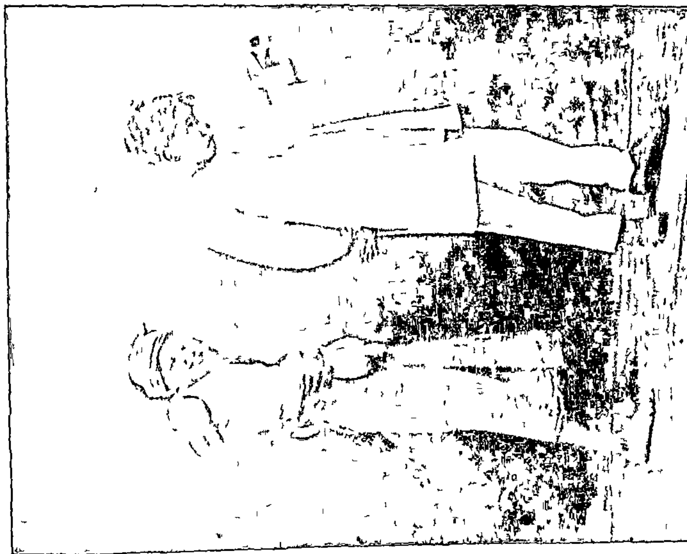










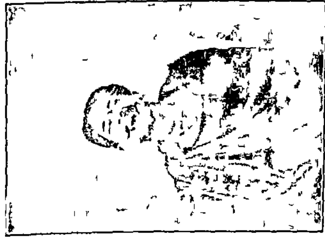




কর্মাণ তামন্দ













[illegible] [illegible]



[illegible]



